# श्रीरामचरितमानस

दोहा:

कहि मृदु बचन बिनीत तिन्ह बैठारे नर नारि।
उत्तम मध्यम नीच लघु निज निज थल अनुहारि॥
240

अर्थ: उन सेवकों ने कोमल और नम्र वचन कह कर उत्तम, मध्यम, नीच और लघु (सभी श्रेणी के) स्त्री-पुरुषों को अपने-अपने योग्य स्थान पर बैठाया॥

राज समाज विराजत रूरे। उडगन महुँ जनु जुग विधु पूरे॥
जिन्ह कें रही भावना जैसी। प्रभु मूरति तिन्ह देखी तैसी॥

अर्थ: वे राजाओं के समाज में ऐसे सुशोभित हो रहे हैं, मानों तारागणों के बीच दो पूर्ण चन्द्रमा हों। जिनकी जैसी भावना थी, प्रभु की मूर्ति उन्होंने वैसी ही देखी॥२॥

नारि बिलोकहिं हरषि हियँ निज निज रुचि अनुरूप।
जनु सोहत सिंगार धरि मूरति परम अनूप॥241

अर्थ: स्त्रियाँ हृदय में हर्षित होकर अपनी-अपनी रुचि के अनुसार उन्हें देख रही हैं। मानों शृंगार रस ही परम अनुपम मूर्ति धारण किये सुशोभित हो रहा हो॥

बलराम कुमार

Scanned with CamScanner

राजत राज समाज महुँ कोसलराज किसोर।
सुंदर स्यामल गौर तन बिस्व बिलोचन चोर॥

242

अर्थ: सुंदर साँवले और गोरे शरीरवाले तथा विश्वभर के नेत्रों को चुरानेवाले कोसलाधीश के कुमार राजसमाज में [इस प्रकार] सुशोभित हो रहे हैं॥

कुंजर मनि कंठा कलित उरहि तुलसिका माल।
बृषभ कंध केहरि ठवनि बल निधि बाहु बिसाल॥243॥

अर्थ: हृदयों पर गजमुक्ताओं के सुंदर कण्ठे और तुलसी की मालाएँ सुशोभित हैं। उनके कंधे बैलों के कंधे की तरह [ऊँचे तथा पुष्ट] हैं, ऐंड़ [खड़े होने की शान] सिंह की सी है और भुजाएँ विशाल एवं बल की भण्डार हैं॥

सब मंचन्ह तें मंचु एक सुंदर बिसद बिसाल।
मुनि समेत दोउ बंधु तहँ बैठारे महिपाल॥244॥

अर्थ: सब मंचों से एक मंच अधिक सुंदर, उज्ज्वल और विशाल था। [स्वयं] राजा ने मुनि सहित दोनों भाइयों को उस पर बैठाया॥

डॉ. बलराम कुमार
हिन्दी-विभाग
डॉ. एल.के.वी.डी.
कॉलेज ताजपुर
समस्तीपुर

बलराम कुमार